मानव की सूझबूझ

रामनाथ सिंह
राजस. रुड़की

पुराने समय में छोटे–छोटे शहर व छोटे–छोटे गांव हुआ करते थे, मानव जनसंख्या कम हुआ करती थी। ज्ञान था परंतु विज्ञान की कमी हुआ करती थी। परंतु समझाने में मानव सक्षम नहीं था। बीमारी अधिक से अधिक थी किन्तु मानव समझने में सक्षम नहीं था। गांव तथा शहर के लोग खुले में शौच के लिए जाते थे, शहर के कुछ लोग घरों के पास बाढ़ा यानी शौच के लिए फूंस या मिट्टी के शौचालय बना लेते थे जिनमें मक्खी मच्छर भिन भिनाने वाले कई प्रकार की बिमारी वाले किटाणु होते थे जिनमें से कई प्रकार की जान–लेवा बिमारी हो जाती थी। कई गांव ही खत्म हो जाते थे। सरकार ने बिमारी पर नियंत्रण किया अच्छी से अच्छी दवाईयां प्रयोग में लाई गई, परंतु शौचालय भूमिगत बनाये जो नीचे से कच्चे छोड़े गये जिनके द्वारा भूजल (Ground Water) दूषित होने लगा जो मानव स्वास्थ्य के लिये हानिकारक सिद्ध होने लगा। जैसे सभी मानव जानते हैं कि मानव शरीर पर हर समय लगभग 14000 जीवाणु आक्रमण करते हैं। उनमें कुछ जीवाणु मानव शरीर के लिए उपयोगी होते हैं किन्तु प्रकृति में कुछ ऐसे तत्व भी पाये जाते हैं जिनका प्रवेश किसी भी प्रकार हो जाये तो मनुष्य विभिन्न प्रकार की असाध्य रोगों से ग्रस्त हो जाता है जैसे H_2 गैस तथा आर्सेनिक नाम का जीवाणु भूमंडल पर पीने वाले पानी में हर जगह पाया जाता है। जहां भी इसकी अधिकता मानक सीमा से अधिक हुई तो मानव पर इसका कुप्रभाव पड़ने लगता है और मनुष्य कई लाईलाज बिमारियों से घिर जाता है। ये मानव शरीर के बिना दिखने वाले दुश्मनों में से एक है। इन जीवाणु से आर्सेनिक एक है जो पानी में घुलनशील है जो दिखाई नहीं देता न ही जीभ द्वारा स्वाद में पता चलता परंतु शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है जिससे मानव शरीर चलने–फिरने से भी मौहताज हो जाता है तथा कई जगह तो देखा गया है कि मानव शरीर से घेंगा तथा हाथ–पांव से लाचार हो जाता है कई स्थानों पर बच्चे अजीब दिखने वाले पैदा होते हैं जो हाथ–पांव से मौहताज होते हैं। यहां तक कि इस बिमारी का कोई इलाज नहीं है। केवल इसका इलाज सावधानी है।

मानव को ही इतनी जानकारी है जिसके द्वारा मानव ही मानव की सहाता कर सकता है जल से इसकी कठोरता को दूर कर सकता है इसका निदान कर मानव ही एक दूसरे को बचा सकता है। वैसे तो सरकार इस ओर काफी ध्यान दे रही है। कई संस्थानों को इस ओर लगाया गया है। वैसे तो पानी को शुद्ध करने के तरीके ईजाद किये गये हैं परंतु साधारण रूप से बालू रेत कोयला आदि से भी पानी को शुद्ध किया जाता है। वैसे बालू और पत्थरों से टकराकर पानी बहुत हद तक शुद्ध हो जाता है तथा गंधकीय गुण आ जाते हैं तथा दाद खाज–खुजली भी इसके इस्तेमाल से ठीक हो जाती है। परंतु मानव ही सृष्टि में मानव का नुकसान करता है नहरों में नालियों का पानी मिल जाता है जिससे वह दूषित हो जाता है तथा कम्पनी द्वारा गंदा पानी नदियों द्वारा जमीन में पहुंचकर अशुद्ध करता है। कच्चा गड्ढा बनाकर जमीनी पानी अर्थात भूजल को दूषित करता है ये मानव की फितरत है जमीन गंदा पानी सोख लेती है जो हम हैंडपम्प, मोटर के द्वारा फिर से इस्तेमाल करते हैं, इसीलिए मानव लाईलाज बिमारी से घिर रहा है।

'मानव कैसा मूर्ख है समझता नहीं बात'।
''अपनी डाली पर बैठ कर उसे ही रहा है काट''।।